सूर्य ग्रहण रहस्य

चर्म चक्षुओं से ज्ञान चक्षु की ओर

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

आत्मा की ज्योति जगाओ,
परमात्मा से योग लगाओ।

आत्मा, मस्तक में सितारे के समान है,
स्वयं को एक चेतन सितारा समझिए।

फूल के समान बनो,
दिव्य गुण धारण करो।

पवित्रता, सुख और शान्ति तीन पत्ते हैं,
इनका मूल आत्म-निश्चय है।

सूर्य ग्रहण रहस्य

पांडव पुराण में लिखा है कि जो सूर्य ग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र सरोवर में स्नान करेगा उसे सहस्त्रों अश्वमेध यज्ञों की सिद्धि का फल प्राप्त होगा। इसी भान्ति महाभारत में कुरुक्षेत्र की महिमा करते हुये लिखा हुआ है कि "स्वर्ग, पृथ्वी व अन्तरिक्ष में कुरुक्षेत्र ही पावनतम स्थान है। गंगा का तो केवल जल ही शुद्ध करता है काशी का पानी और मिट्टी दोनों पवित्र हैं परन्तु यदि कोई कुरुक्षेत्र की धरती पानी व वायु कहीं भी शरीर छोड़ेगा तो मुक्ति को प्राप्त होगा।"

सम्भवतः इसी महात्मय की प्राप्ति के लिये लाखों की संख्या में स्त्री पुरुष सूर्य ग्रहण के अवसर पर कुरुक्षेत्र में आए स्नान करते हैं। बिमारी फैलने के भय व रहन सहन की अनेकों

कठिनाईयों को झेलते हुए भी भक्तों का एक समुद्र सा उमड़ आता है और भक्तिभावना वश आए स्नान कर अपने को धन्य समझते हैं।

परन्तु विचारने का विषय यह है कि क्या ऐसे सभी लाखों नर नारी केवल स्नान मात्र से सहस्त्रों अश्वमेध यज्ञों का सिद्धि फल प्राप्त करेंगे। क्या वो सभी चारों दिशाओं पर विजयी चक्रवर्ती राज्य के अधिकारी बन जायेंगे ? जिस की प्राप्ति केवल एक अश्वमेध यज्ञ की सिद्धि से मानी जाती है। क्षीर नीर विवेक से जब हम इस विषय पर विचार करते हैं तो हमें आभास होता है कि हमारी मान्यताएं आलौकिकता से संसारिकता की ओर, आध्यात्मिकता से पार्थिवकता की ओर, ज्ञान से अंध-श्रद्धा की ओर तथा प्रकाश से अंधकार की ओर बढ़ चुकी है। हम अपनी पौराणिक गाथाओं व आख्यानों को शब्दशः सत्य मानते हये अपनी चिरपरिचित

अन्धश्रद्धाभरी भक्तिभावना वश स्वीकार करने के आदि हो चुके हैं। निस्संदेह महाभारत तथा गीता की अनेक भाष्याओं, संहिताओं एवं टीकाओं में विचारकों ने इस सत्यता पर प्रकाश डालने का अत्सक प्रयास किया है। महाभारत की ऐतिहासिकता तथा गीता की मौलिकता पर संदेह व्यक्त किये गए हैं और यह निर्विवाद सत्य है कि वर्तमान समय पर मौजूद गीता एवं महाभारत के मूल श्लोकों में अनेक गुणा विस्तार हो चुका है तथा विचारक इसे एक ऐतिहासिक ग्रन्थ न मानकर केवल एक धर्म ग्रन्थ मानना ही उचित समझते हैं।

सूर्य ग्रहण एक भौगोलिक तथ्य

(देखिए पृष्ठ नं० 4)

आज के वैज्ञानिक युग में सूर्य अथवा चन्द्र ग्रहण को क्या कोई धार्मिक मान्यता दी जा
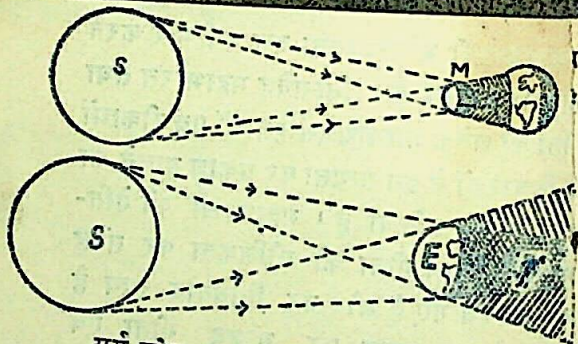
सूर्य और चन्द्र ग्रहण के समय चित्र में सूर्य चन्द्र और पृथ्वी की अन्तरिक्ष में स्थितियां दिखाई गई हैं। पृथ्वी अपनी धुरी के इर्द गिर्द 24 घण्टे में घूमती हुई सूर्य के चारों तरफ 365¼ दिन में एक चक्कर काटती है तो चन्द्रमा अपनी धुरी के इर्द गिर्द 27⅓ दिन में घूमता हुआ साथ साथ सूर्य के गिर्द घूमती हुई पृथ्वी के गिर्द भी 27⅓ दिन में एक चक्कर काटता हुआ घूमता चला जाता है। इन नक्षत्रों एवं उपनक्षत्रों की इन गतिविधियों से ही दिन रात पूर्णमा तथा अमावस्या की रातें तथा सूर्य और चन्द्र ग्रहण धरती पर भासते हैं।

सकती है ? भूगोल को पढ़ने वाला किसी छोटी श्रेणी का विद्यार्थी भी जानता है कि सर्य और पृथ्वो के मध्य जब चन्द्रमा एक सीधी रेखा में आ जाता है तो पृथ्वी पर विद्यमान लोगों को सूर्य का वो भाग दिखाई नहीं पडता, जहाँ चान्द की छाया पड़ती है और पृथ्वी के उस भाग के लोगों के लिये वो समय सूर्य-ग्रहण माना जाता है। इसी भान्ति सूर्य चान्द के मध्य जब हमारी पृथ्वी एक सीधी रेखा में आ जाती है तो सूर्य की किरणें चन्द्र पर नहीं पड़ती और पृथ्वी की छाया चान्द पर पढ़ने लगती है तो भूमि के उस भाग से चान्द का न दीखना चन्द्रग्रहण माना जाता है। जब यह छाया आंशिक रुप से पड़ती है तो अंशिक सूर्य व चन्द्र ग्रहण माना जाता है। ज्योतिष विद्वानों ने सूर्य, चान्द धरती तथा अनेकानेक ग्रहों, उपग्रहों तथा नक्षत्रों की गति विधियों का ज्ञान एकत्रित कर अन्तरिक्ष

विज्ञान को जन्म दे दिया है तथा इस ज्योतिष विद्या के आधार से सूर्य व चन्द्र ग्रहण के दिन व समय की पूर्व घोषणा कर देते हैं। ज्योतिष विज्ञान का गणित तो सहस्त्रों वर्षों से बड़ता बड़ता अभी नक्षत्रीय विज्ञान की तरफ असंख्य प्रकाश वर्षों तक बड़ चुका है।

सूर्य ग्रहण स्नान ?

सूर्य ग्रहण के अवसर पर लाखों नर नारियों का सरोवर स्नान क्या उन में कोई आत्मिक शुद्धता, आध्यात्मिक चेतनता व श्रेष्ठ कर्म प्रवृत्ति के बीज बो देगा ? यदि इस प्रकार स्नान करने से पाप धुल जाते हों तब तो कर्मों की गति व कर्म फल का लेखा जोखा समाप्त करना सहज ही है। फिर तो जीवन भर के पाप कर्म एक ही वार टिकट खर्च डुबकी लगाने से समाप्त हो जाएं। दान पुण्य, जप तप

उपवास इत्यादि की कोई ग्रावश्यकता ही न रह जाए। जैसे की ऊपर लिखा है सूर्य ग्रहण ग्रवसर पर कुरुक्षत्र में स्नान करने से हजारों ग्रश्वमेध यज्ञो के फल की प्राप्ति होती है। तव तो लाखों लोग सहज ही विकर्माजीत बन जगत्‌जीत चक्रवर्ती राज्य पद को प्राप्त कर लें ग्रौर विश्व के सभी लोग इस दिन के लिये कब से कुरुक्षेत्र पहुँच चुके होते।

बात ज्ञान सूर्य की

प्रसिद्ध उक्ति है 'ज्ञान सूर्य प्रगटा ग्रज्ञान अधेर विनाष' ग्रर्थात् ज्ञान सूर्य परमात्मा प्रगट होकर ग्रज्ञानता के अंधकार का विनाष करते हैं। वर्तमान समय पर हम सभी मनुष्यत्माएं ग्रहण ग्रस्त हैं। वो ग्रहण है माया ग्रथवा काम-क्रोध लोभ मोह एवं ग्रहंकार रुपि मनोविकारों का। इन विकारों के प्रभाव से हर मनुष्यात्या दुःखी व्यथित तथा ग्रशान्त है।

मायावी ग्रहण ने आत्माओं की शक्ति को क्षीण कर दिया है तथा आत्मिक निर्बलता के कारण मानव अपने संस्कारों तथा वातावरण की तमो प्रधान प्रदूषणता से ग्रस्त है। इस लिये इस माया के ग्रहण से छूटने के लिये प्रत्येक आत्मा छटपटा रही है निस्संदेह इसी का प्रणाम है कि लाखों नरनारी सूर्य ग्रहण के अवसर पर स्नान करने को लालायित रहते हैं परन्तु आत्मा पर छाये मनोविकारों के ग्रहण से मुक्ति क्या जल स्नान द्वारा सम्भव है? स्वयं परमात्मा शिव ज्ञान सूर्य रूप से प्रजापिता ब्रह्मा के साकार माध्यम द्वारा यह ईश्वरीय शिक्षा देते हैं कि बच्चे योग एवं ज्ञान स्नान से ही आत्मा की कालिख धुल सकती है। एक मेरे साथ योग लगाने से ही तुम पतित पावन बन सकते हो। क्योंकि एक मैं ही केवल पतित-पावन हूँ न कि पानी की नदियां व सरोवर इत्यादि। मेरी याद

अथवा स्नेह स्मृति से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे तथा पापों का बोझ हलका होगा।

दे दान तो छूटे ग्रहण

त्रिमूर्ति शिव भगवानु वाचः 'दे पांच विकारों का दान तो छूटे आत्मा पर चढ़ा पापों का ग्रहण'।

आत्मा का यह ग्रहण न तो सोना, चांदी कपड़ा आदि दान करने से और न ही शरीर को स्नान आदि कराने से उतर सकता है। ऐसा तो आप अनेक वार कर चुके हैं।

आत्मा पर चढ़ा पापों का बोझ अथवा अज्ञान अन्धकार रूपी पर्दा तो केवल सर्वात्माओं के मुक्ति दाता ज्ञान सूर्य निराकार परमपिता परमात्मा शिव द्वारा प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से प्रदत्त ईश्वरीय सत्य ज्ञान एवं सहज राजयोग रूपी अमृत में आत्मा को ज्ञान स्नान करवाने से ही उतर सकता है। इसी के लिए गीता में कहा

गया है कि सच्चा गीता ज्ञान पहले पहले 'सूर्य' अर्थात् "ज्ञान सूर्य परमात्मा शिव" ने दिया था।

दान पुराने संस्कारों का

इसी भान्ति ग्रहण काल के दौरान व पहले बनी खाने की वस्तुओं का भी उपयोग ग्रहण के बाद नहीं किया जाता। यह बात कुछ धार्मिक मान्यताओं में अटल विश्वास रखने वाले लोग तो व्यवहार में लाते हैं। परन्तु समूचे रूप में तो व्यवहारिकता से बाहर की बात है। परन्तु यह मान्यता हमें वास्तव में इस बात का बोध कराती है कि हमें ग्रहण निवृति के लिये अपने पुराने स्वभाव तथा संस्कारों को त्यागना है जबकि ज्ञान सूर्य प्रगट होकर आत्माओं को पतित से पावन कर रहे हैं तो मायावी संस्कारों व पुराने विचार स्वभाव को पुनः स्वीकार न करना है। इस लिये अपनी कमजोरियों

अवगुणों या पुराने संस्कारों का दान परमात्मा को देना है व उनको अर्पित कर देना है। अथवा इनको त्याग देना है तभी माया के ग्रहण से छुट सकते हैं।

कुरूक्षेत्र : कर्मक्षेत्र

इसी दृष्टिकोण से जब हम कुरुक्षेत्र की धरती पर विचार करते हैं तो कुरुक्षेत्र को धर्म क्षेत्र कहा गया है। गीता में शरीर को क्षेत्र तथा आत्मा को क्षेत्रज्ञ माना गया है तभी तो गीता में कहा गया है। 'वत्स ! जिस क्षेत्र में तुम्हें खड़े होकर युद्ध करना है वह मेरे द्वारा जानों। वह क्षेत्र तुम्हारा यह शरीर है' कुरु शब्द करने वाले को भी कहा गया है। अनेक टीकाकारों ने कुरुक्षेत्र युद्ध को मानव हृदय में होने वाले धर्म-अधर्म युद्ध का प्रतीक ही माना है। वास्तव में परमात्मा शिव ने वर्तमान समय अनुसार कल्प 5000 वर्ष पूर्व सत्य गीता ज्ञान व राजयोग

की शिक्षा हम आत्माओं को दी थी जिसके फल स्वरूप ही भारत भू खंड में देवी देवताओं का राज्य स्थापित हुआ और उनका माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा होने के नाते ब्रह्मा ऋषि देश के नाम का गायन भी महाभारत में आया है। ब्रह्मा ऋषि देश को ही कर्म क्षेत्र अथवा कुरुक्षेत्र क प्राय:वाची माना जाता है। ज्योतिसर परमात्मा शिव का प्राय:वाची है। इस लिये कुरुक्षेत्र में महाभारत युद्ध एक महान प्रतीकात्मक अध्यात्म गाथा है जिसमें पाप और पुण्य धर्म और अधर्म को अलंकारिक रूपों से व्यक्त किया गया है। इस प्रकार महाभारत एक इतिहास नहीं बल्कि धर्म शास्त्र के रूप में ज्यादा यथार्थ है।

युद्धों की भूमि कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्र में शरीर छोड़ने से मुक्ति की प्राप्ति का महत्व तो निस्संदेह इस भूमि पर व थानेसर के मैदान में जो हिन्दु राजाओं को अनेक

युद्ध लड़ने पड़े उस में योद्धाओं का मनोवल वढ़ाने के लिये व राष्ट्रीयता पैदा करने के लिये ऐसी धार्मिक मान्यातात्रों को वल दिया गया होगा। क्योंकि रचनाकार वाणभट्ट के समय तथा ह्यू न सांग के लेखों में यह सिद्ध है कि राजा हर्ष वर्धन के समय थानेसर एक कृषि प्रधान, विकसित-सभ्यता से सम्पन्न, शिक्षा में अग्रणी तथा स्वस्थ्य और सौंदर्य सम्पन्न नागरिकों का एक उन्नत नगर था। इस धरती पर अनेकों युद्ध हुए 1043 AD. में हिन्दु राजाओं ने गजनाविद गवंनर से थानेसर को वचाया फिर 150 वर्ष वाद मुहम्मद गौरी से हार गये। 1215 में राजा अल्तमश नें ताजूदोन यालदाज को थानेसर में हराया। 1239 AD. में रजिया वेगम अपने भाई से युद्ध करती हुई इस स्थान पर मृत्यु को प्राप्त हुई। वावर ने पानीपत के रास्ते में कुरुक्षेत्र पर हमला किया। 1606 में शहज़ादा खुसरो ने थानेसर पर हमला किया। औरंगजेब

ने कुरुक्षेत्र को तबाह किया । तब 1709 में बन्दा बैरागी, 1729 में दिलवर खान 1738 में नादिरशाह 1755 में कुतुबखान रोहिला और 1759 में अहमदशाह अब्दाली और पुन: 1761 में सिक्खों के हाथों में यह नगर गया । इस प्रकार यहां अनेक युद्ध लड़े गये और विभिन्न धर्मों की यहाँ यादगारें हैं । इस प्रकार ऐसी धरती का महत्व व गायन धर्म ग्रन्थों में सम्मिलित हो जाना स्वाभाविक ही था ।

मायावी ग्रहण छोड़ विक्रमाजीत बन

सूर्य ग्रहण अवसर पर स्नान करने के लिये एकत्रित सभी प्रभुप्रिय ईश्वरीय संतान भाईयों तथा बहिनों को हम यह संदेश देते हैं कि वर्तमान समय परमात्मा द्वारा प्राप्त हो रहे ज्ञान व योग स्नान अथवा धारणा से ही हम आत्माएं पतित से पावन बनकर मायावी ग्रहण से छूट सकती है तथा अपनी कर्म इन्द्रियों पर विजयी बन विकर्माजीत बन सकते हैं ।

ईश्वरीय विश्व विद्यालय

संक्षिप्त परिचय

भारतवर्ष करोडों लोगों का राष्ट्र है और इस में अनेकों धर्मों को मानने वाले लोग हैं। परन्तु प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय अपनी अलौकिकता लिये एक अनूठी ही अध्यात्मिक संस्था है। जिसका मुख्य केन्द्र माऊंट आबू में है। इसकी स्थापना स्वयं निराकार परम पिता परमात्मा शिव ने 1937 में की। निराकार परमात्मा शिव ने जिस साधारण मनुष्य तन में प्रवेश किया उसका नाम प्रजापिता ब्रह्मा रखा। प्रजापिता ब्रह्मा का पूर्व नाम दादा लेख राज था जो कि एक अत्यन्त धर्म परायण उदारवृति के दानी व्यक्ति थे। वो श्री नारायण के अनन्य भक्त थे तथा हीरे जवाहरात के कलकत्ता में एक प्रसिद्ध व्यापारी

थे। कराची तथा हैदराबाद (सिन्ध) में भी उन की सम्पति एवं कार्य व्यवहार का विस्तार था। 1937 में दादा को अचानक भक्ति करते हुये दिव्य साक्षात्कार हुये। उन्होंने परमात्मा की ज्योति का, चतुर्भुज विष्णु का, आने वाली स्वर्गीय सृष्टि और इस कलियुगी दुनिया के विनाश का साक्षात्कार किया। तभी परमात्मा ने उनको नई दैवी समाज की रचना की रूप रेखा से अवगत कर इस कार्य के निमित्त ठहराया और उनमें दिव्य प्रवेश कर नई सतयुगी दुनियां की स्थापना हेतु इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना की। अथवा कहें कि परमात्मा रूद्र (शिव) ने सच्चे गीता ज्ञान यज्ञ का आरम्भ किया, उन्होंने इस बात की शिक्षा दी कि जो आत्माएं इस यज्ञ में अपने पांचों विकारों की आहुति डालेगी वही सतयुगी विश्व की अधिकारी बनेंगी। रूद्र यज्ञ में किसी तिल चावल

ो की ग्रहुति डालने की बात न थी बल्कि
राइयों कमियों व दुःख देने वाले काम क्रोध
ोभ मोह ग्रहंकार ग्रादि विकारों का स्वाहा
रने की श्रीमत दी।

ानवता की सेवा में तत्पर विश्व विद्यालय

आज इस अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के
ारा देश विदेश में 350 से अधिक अध्यात्मिक
ग्रहालयों, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राजयोग
शक्षण केन्द्रों व उपकेन्द्रों द्वारा लाखों आत्माओं
ी आत्मिक उन्नति हो रही है। इसके अति-
रिक्त आध्यात्मिक प्रदर्शनियों, सम्मेलनों,
ोजेक्टर शो, प्रवचनों तथा साहित्य के द्वारा
अनगिणत लोगों को सच्चा रूहानी ज्ञान प्राप्त
हो रहा है। स्कूलों कालिजों में विद्यार्थियों के
नैतिक तथा चारित्रिक विकास हेतु विशेष
कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। विभिन्न
सम्मेलनों गोष्ठियों द्वारा व्यक्तिगत सामाजिक

तथा राष्ट्रीय समस्याओं का व्यवहारिक आध्यात्मिक हल प्रस्तुत किया जाता है। जीवन को कमल पुष्प समान व्यतीत करने की विधि का ज्ञान देते हुये आदर्श गृहस्थ जीवन की परिपाटी पर चलने की पूर्ण शिक्षा दी जाती है। इस प्रकार मानवमात्र को देश, जाति, धर्म, रंग व लिंग भेद से ऊपर उठाकर आध्यात्मिक जागृति पैदा की जा रही है, ताकि आत्मनिश्चय में स्थित हो घर गृहस्थ व कार्यव्यवहार में रहते हुये न्यारे अथवा उपराम रह विकारों से मुक्त हो सकें। क्योंकि विकार ही दुःख का मूल कारण है। इस प्रकार भारत के गाँव गाँव से लेकर विश्व के अनेक राष्ट्रों में इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा आध्यात्मिक जन जागृति लाने का कार्य चल रहा है। वर्तमान समय इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के तत्वाधान में नारी उत्थान विभाग, युवा आध्यात्म संगठन विभाग बाल विकास विभाग, ग्रामीण सेवा विभाग,

चारित्रिक शिक्षा विभाग, अनुसंधान विभाग, अध्यापक प्रशिक्षण विभाग, राजयोग प्रशिक्षण शिविर आयोजन विभाग इत्यादि अनेक संगठन पूर्ण समर्था से कार्य कर रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में सहयोग

निस्संदेह सम्पूर्ण मानवता का उत्थान कोई मानवीय कार्य नहीं है इसलिये ईश्वरीय विश्व विद्यालय भी विभिन्न संगठनो द्वारा विश्व में आयोजित कार्यक्रमों में सहयोग देता चला आ रहा है। गत वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के दौरान कार्यक्रमों में संस्था के प्रतिनिधियों ने भारत बर्लिन, टोरंटो तथा संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भाग लिया।

सविनय निवेदन

प्रिय पाठक गण ! आप अपने किसी भी निकटवर्ती ईश्वरीय सेवा केन्द्र पर पहुँच कर अपने जीवन में सच्ची रूहानी रोशनी, आत्मिक शान्ति और राजयोग द्वारा परमात्मा से स्नेह

सम्बन्ध स्थापित कर ईश्वरीय शक्तियों अ
दिव्य गुणों के खजाने को अवश्य प्राप्त क
जिससे ही आपके जीवन से भटकन खत्म हो
तथा जिस सत्यता की आप खोज में हैं उसे प्रा
कर सकेंगे। संसार में रहते हुये महान योगी, वे
के सन्यासी तथा पवित्र गृहस्थ प्रवृति के पाल
बन जायेंगे और हर्ष उल्हास आनन्द तथा सुखि
अवस्था आपके सदा साथ रहेंगी। यहाँ प्रा
होने वाली शिक्षा को समझने तथा धारण कर
से ज्ञान चक्षु तथा मुक्ति जीवन मुक्ति के वरदा
को प्राप्त कर ऊंचे दर्जे की रूहानियत
मालिक बन जायेंगे।

इस लिये ईश्वरीय विश्व विद्यालय
माध्यम से परमात्मा द्वारा वर्तमान समय मिल
सच्चे गीता ज्ञान से लाभन्वित हो परम यो
परंतप (परम तपस्वी) अर्जुन बन माया से यु
में इष्ट हो सच्चे युद्धिष्ठर की न्याई अप
आसुरी संस्कारों से युद्ध कर परम पद अर्था
सतयुगी दैवी पद को प्राप्त करें।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी
ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा संचालित
कुछ राजयोग शिक्षण केन्द्रों के पते :-

आबू—शक्ति भवन, सूर्यास्त मार्ग।
अहमदाबाद—गोरधन वाड़ी, कांकरिया
अमृतसर—44 ए, लारेन्स रोड।
अम्बाला छावनी—सब्जी मण्डी।
अम्बाला शहर सपाटू रोड।
आगरा—5, महात्मा गांधी रोड
इन्दौर—93, महात्मा गांधी रोड
कलकत्ता 1 ए, आशुतोष मुखर्जी रोड
कानपुर—16/64, सिविल लाइन्स
करनाल--रमेश नगर
गुड़गांव--प्रताप नगर
गुरदासपुर--27 बी (8) अमामबाड़ा
चण्डीगढ़--कोठी नं० 3037 सैक्टर 18 डी
जयपुर--किशनपोल बाजार

जालन्धर शहर--407, लाजपत नगर
जबलपुर--190, नेपियर टाउन
जम्मू तवी--रेशमघर कालोनी
तलवाड़ा--1262, T-2 सैक्टर 3
देहरादून--67/8, राजपुर रोड
दिल्ली-7--151 ई, कमला नगर
नई दिल्ली-5--25 न्यू रोहतक रोड
नई दिल्ली--डी-1 साउथ एक्सटेंशन-II
दसूया--आहलूवालिया गली
नैनीताल--प्रेम भवन, मल्ली ताल
पठानकोट--रामलीला मैदान के सामने
पूना--406/20 क्वार्टर गेट
पटियाला--चांदनी चौक
फिरोजपुर कैंट--बाजार नं० 1
फरीदकोट-लाईन बाजार गली नं० 1
बैंगलोर-रंगा स्वामी स्ट्रीट
बटाला-गांधी चौक, लोहा मण्डी

म्बई-7-23, दारुलमुलक, हार्वे रोड
बिलासपुर-ठाकुरदास का मकान, मेन मार्कीट
भटिण्डा-4648, सुभाष पार्क
भोपाल-रोशनपुरा, टी. टी. नगर
मंडी (हिमाचल)-चौवाटा बाजार
मद्रास-178/179, सुभाष बोस रोड
मोगा-स्टेडियम रोड, बैंक कालोनी
मेरठ-1371, इरविन रोड
लुधियाना-502 कालेज रोड
शिमला-3--होटल फाउन्टेन ब्ल्यु, कमांड रोड
सहारनपुर-पुतली धर्मशाला
सुन्दर नगर-(हिमाचल)38/S-2बी.एस.एल.कलोनी
सोलन-निकट बस सटैंड
रोपड़-सदर बाजार
रोहतक-विजय भवन भवानी स्टैंड
होशियारपुर-गली नं० 3 जगत पुरा
नवांशहर लालियां मोहल्ला इत्यादि।

हरनाम प्रिंटिंग प्रैस, खिंगरां गेट, जालन्धर।

◇ **Correspondence Course**

for Spiritual Enlightenment

This unique facility has been offered by the Ishwariya Vishwa Vidiyalaya for the true seekers, In Hindi & English.

Total Fee Including Postage : Rs. SIx Only

For the First Lesson Write immidiately at the following address along with Rs. One Postage Stamp.

Director
Correspondence Course
Spiritual Museum
25-New Rohtak Road
Karol Bagh, Delhi-5.

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे

- हे वत्स, जिस क्षेत्र में तुम्हें खड़े होकर युद्ध करना हैं वह मेरे द्वारा जानो। वह क्षेत्र तुम्हारा यह शरीर है।
- हे अर्जुन, काम ही मनुष्य का दुर्जय शत्रु है। तू ज्ञान द्वारा मन को वश करके इस शत्रु को मार। (गीता अ 3 श्लोक 43)
- हे वत्स, ज्ञान रुपि तलवार से तुम अपने संशय तथा अज्ञान रुपि शत्रु को काटने का पुरुषार्थ करो।
- हे वत्स, तुम अपने कर्म मेरे समर्पण करते हुये आशा तृष्णा से रहित होकर आत्म निश्चय में स्थित होकर युद्ध करो।
- हे वत्स, तुम सदा सर्वदा मुझे याद करते हुये मन और बुद्धि को मेरे अर्पित करते हुये युद्ध करो।
- हे गुडाकेश ! यदि तुम इस युद्ध को नहीं करोगे तो तुम्हें स्वधर्म और कीर्ति की प्राप्ति नहीं होगी और तुझे पाप भी लगेगा।